International Journal of Social Science and Humanities
www.humanitiesjournals.com
Online ISSN: 2664-8628 Print ISSN: 2664-861X
Received: 20-05-2024, Accepted: 13-06-2024, Published: 06-07-2024
Volume 6, Issue 3, 2024, Page No. 1-4

नेताजी सुभाष चंद्र बोस तथा उनके विचार

अचला राम
सहायक आचार्य, इतिहास विभाग, राजकीय महाविद्यालय, गिडा, बालोतरा, राजस्थान, भारत

सारांश

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में सुभाष चंद्र बोस एक राष्ट्रीय नायक, प्रभावशाली स्वतंत्रता सेनानी व दुनिया के महानतम देशभक्तों में से एक थे। भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में नेताजी ने न केवल राजनीतिक स्वतंत्रता की वकालत की बल्कि एक सम्मोहक सामाजिक विचारधारा को भी व्यक्त किया, जिसने भारतीय समाज के ताने–बाने को फिर से परिभाषित करने की मांग की। उनका दृष्टिकोण राजनीतिक सशक्तिकरण से परे विभिन्न जातियों, धर्मों और भाषाई समूहों के बीच सामाजिक सद्भाव पर जोर देना था। बोस के सामाजिक न्याय की खोज ने उनकी विचारधारा की एक और आधारशिला बनाई, जिसका लक्ष्य समान अवसरों और संसाधन वितरण को बढ़ावा देने वाली नीतियों के माध्यम से सामाजिक और आर्थिक असमानताओं को खत्म करना था। बोस ने स्वतंत्रता आंदोलन में महिलाओं की सक्रिय भागीदारी की भी वकालत की। प्रस्तुत लेख बोस की बहुमुखी सामाजिक विचारधारा पर प्रकाश डालता है, जिसमें सामाजिक न्याय, महिला सशक्तिकरण और लोकतांत्रिक मूल्यों जैसे प्रमुख आयामों पर चर्चा की गई है।

झमलूवतकेः विचारधारा, नेताजी, सामाजिक सुधार, स्वतंत्रता, महिला सशक्तिकरण, समाजवाद

सुभाष चंद्र बोस का जन्म 23 जनवरी 1897 को कटक, ओडिशा में हुआ। उनके पिता जानकीनाथ बोस एक सरकारी वकील थे, जो रूढ़िवादी राष्ट्रवाद में विश्वास करते थे तथा मां प्रभावती बोस भारतीय नारीत्व का एक उल्लेखनीय उदाहरण थीं। बोस अपने माता–पिता के 14 बच्चों वाले परिवार में नौवें थे। 1913 में मैट्रिक परीक्षा में दूसरा स्थान प्राप्त करने के बाद उन्होंने प्रेसीडेंसी कॉलेज में प्रवेश लिया। बाद में उन्होंने स्कॉटिश चर्च कॉलेज से 1919 में दर्शन शास्त्र की ऑनर्स परीक्षा में प्रथम श्रेणी तथा विश्वविद्यालय में द्वितीय स्थान प्राप्त किया। एम.ए.. में प्रवेश के कुछ दिनों पश्चात एक दिन सांयकाल उनके पिता ने उन्हें भारतीय प्रशासनिक सेवा परीक्षा की तैयारी के लिये इंग्लैण्ड जाने को कहा। 15 सितम्बर, 1919 को उन्होंने इंग्लैण्ड के लिये प्रस्थान किया और 21 अक्टूबर को सुभाष लंदन पहुँचे। केम्ब्रिज में अध्ययन करते समय सुभाष ने यह अनुभव किया कि वहाँ पर एक विदेशी को भी उतनी ही स्वतंत्रता दी जाती है, जितनी कि एक अंग्रेज को, लेकिन भीतर ही भीतर उनमें श्रेष्ठता का भाव रहता था। सुभाष चन्द्र बोस के जीवन का निर्णायक मोड़ अगस्त 1920 में पै की परीक्षा में उत्तीर्ण होकर मेरिट में चौथा स्थान प्राप्त करना और तत्पश्चात् उस महत्वपूर्ण पद से त्यागपत्र देना था। इस घटनाक्रम में बोस का राष्ट्र के प्रति अटूट एवं अविचलित प्रेम दृष्टिगत होता है। सिविल सेवा की नौकरी से इस्तीफा दे कर सुभाष चंद्र बोस 16 जुलाई, 1921 को इंग्लैंड से भारत लौटे। भारत लौटने के बाद नेताजी, महात्मा गांधी द्वारा शुरू किए गए देशव्यापी असहयोग आंदोलन में शामिल हो गए। गांधीजी के निर्देश पर उन्होंने देशबंधु चित्तरंजन दास के अधीन एक सामान्य कार्यकर्ता के रूप में काम करना शुरू किया और अपनी उल्लेखनीय नेतृत्व क्षमता और महत्वाकांक्षा के परिणामस्वरूप वह तेजी से आगे बढ़े। कांग्रेस में बोस का पहला कार्यभार बंगाल प्रदेश कांग्रेस समिति तथा राष्ट्रीय सेवा दल का प्रचार प्रधान के रूप में था। उन्हें दो बार भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस 1938 में हरिपुरा और 1939 में त्रिपुरी के अध्यक्ष के रूप में चुना गया। बाद में महात्मा गांधी के बीच वैचारिक मतभेदों के कारण 1939 में सुभाष चंद्र बोस ने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष पद से त्यागपत्र दे दिया। बोस की विचारधारा समाजवाद और वामपंथी अधिनायकवाद की ओर झुकी हुई थी। 1939 में उन्होंने कांग्रेस के भीतर एक गुट के रूप में ऑल इंडिया फॉरवर्ड ब्लॉक का गठन किया। जिसका मुख्य उद्देश्य साम्राज्यवाद विरोधी संघर्ष की तैयारी में कांग्रेस पार्टी के सभी कट्टरपंथी तत्वों को एक साथ लाना ताकि समानता और सामाजिक न्याय के सिद्धांतों के अनुपालन के साथ भारत की पूर्ण स्वतंत्रता का अर्थ फैला सकें।

अध्ययन के उद्देश्य

बोस की समाजवाद की अवधारणा को समझना।
सुभाष चंद्र बोस का समाज के विभिन्न वर्गों तथा महिलाओं के प्रति दृष्टिकोण के बारे में जानना।

अध्ययन विधि

शोध पत्र द्वितीयक डेटा स्रोतों पर आधारित है। संबंधित विषयों की जानकारी पुस्तकों, समाचार पत्रों, लेखों, ई–पत्रिकाओं, इंटरनेट तथा राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय शोध अध्ययनों के विश्लेषण एवं समीक्षा के माध्यम से एकत्र की गई है।

भगवत गीता के आदर्श और स्वामी विवेकानन्द की शिक्षाओं का प्रभाव

नेताजी के विचारों और समाज सेवा को स्वामी विवेकानन्द की सार्वभौमिकता की शिक्षाओं से आधार मिला। बोस की समाजवाद की अवधारणा विवेकानन्द की मानवता की सेवा की अवधारणा से अधिक प्रेरित थी सार्वभौमिकता पर स्वामी विवेकानन्द की शिक्षाएँ उनके राष्ट्रवादी विचार, समाज सेवा और सुधार पर उनके जोर ने सुभाष चंद्र बोस को उनके युवा दिनों से ही प्रेरित किया था। 30 मार्च 1929 को रंगपुर राजनीतिक सम्मेलन में अपने अध्यक्षीय भाषण में उन्होंने कहारू ष्मानव–निर्माण के कार्य में स्वामी विवेकानन्द ने अपना ध्यान किसी विशेष संप्रदाय तक सीमित नहीं रखा बल्कि पूरे समाज को अपनाया। मुझे विवेकानन्द से जो दर्शन मिला वह मेरी आवश्यकताओं को पूरा करने के सबसे करीब था और इसने मेरे नैतिक और आध्यात्मिक जीवन के पुनर्निर्माण के लिए एक आधार प्रदान किया। स्वामी विवेकानन्द के नक्शेकदम पर चलते हुए सुभाष चंद्र बोस ने देशभक्ति, बलिदान का महान उदाहरण प्रस्तुत किया और भारत की स्वतंत्रता के महान उद्देश्य के लिए खुद को मानसिक रूप से मजबूत बनाया।

सुभाष चंद्र बोस का मानना था कि भगवद गीता अंग्रेजों के खिलाफ संघर्ष के लिए प्रेरणा का एक बड़ा स्रोत थी। भारत के प्राचीन धर्मग्रंथों की ताजा व्याख्या ने उन्हें बेहद आकर्षित किया था। कुछ विद्वान सोचते हैं कि हिंदू आध्यात्मिकता उनके राजनीतिक और सामाजिक विचार का एक अनिवार्य हिस्सा थी। उन्होंने प्राचीन हिंदू धर्मग्रंथों के साथ–साथ हेगेल, कांट, बर्गसन और अन्य पश्चिमी दार्शनिकों के दर्शन का भी अध्ययन किया। इस प्रकार हम देखते हैं कि उन्होंने न केवल स्वतंत्रता की कल्पना की बल्कि उसके बाद क्या आने वाला था इसकी भी कल्पना की।

सुभाष चंद्र बोस की सामाजिक अवधारणा

बोस सामाजिक न्याय और समानता के समर्थक थे। सुभाष चन्द्र बोस ने जात–पाँत के आधार पर भेदभाव के विरुद्ध रहे, जब उन्होंने पिछड़े वर्गों के लिये सामाजिक–आर्थिक एवं शैक्षणिक विकास और आत्मनिर्भरता की वकालत की, उस समय आज के अनुसूचित जातियों, आदिवासियों और पिछड़े वर्गों के तथाकथित नेताओं का कहीं नामोनिशान नहीं था। वह भारतीय समाज के भीतर सामाजिक और आर्थिक असमानताओं को दूर करने में विश्वास करते थे। स्वतंत्रता के बाद के भारत के लिए उनके दृष्टिकोण में समाज के हाशिए पर मौजूद वर्गों के उत्थान को बढ़ावा देने के उपाय शामिल थे।

समाजवादी समाज की स्थापना ही सुभाष बोस के सामाजिक, राजनैतिक चिन्तन का आधार थी, उनकी न्याय संबंधी समाजवादी अवधारणा अपने में मौलिक थी। वे एक ऐसे समाजवादी व्यवस्था की भारत में स्थापना के स्वप्न दृष्टा थे जो भारतीय सांस्कृतिक परिवेश के अनुकूल हो। उनका मानना था कि हमारे देश की प्रमुख समस्याएं गरीबी, अशिक्षा, बीमारी, कुशल उत्पादन एवं वितरण सिर्फ समाजवादी तरीके से ही हल की जा सकती है। 1931 में अखिल भारतीय नौजवान भारत सभा के कराची सम्मेलन में अध्यक्षीय भाषण के दौरान बोस ने घोषणा की यदि स्वतंत्रता को हमारे जीवन का मूल सिद्धांत बनाना है तो इसे सामाजिक पुनर्निर्माण का आधार भी बनाया जाना चाहिए। बोस जिन सिद्धांतों को स्वतंत्र भारत के सामूहिक जीवन का आधार मानते थे वे थे न्याय, समानता, स्वतंत्रता, अनुशासन और प्रेम, जिन्हें वे समाजवाद का सार मानते थे। उन्होंने घोषणा की कि स्वतंत्रता से मेरा तात्पर्य पूर्ण स्वतंत्रता से है अर्थात् व्यक्ति के साथ–साथ समाज के लिए भी स्वतंत्रता, अमीरों के साथ–साथ गरीबों के लिए भी स्वतंत्रता, पुरुष के साथ–साथ स्त्री के लिए भी स्वतंत्रता, सभी व्यक्तियों के लिए स्वतंत्रता और सभी वर्ग बोस की विचारधारा के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि उनके मन में यह दृढ विश्वास था कि स्वतंत्र भारत को जिन सामाजिक समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है उन्हें केवल समाजवादी आधार पर ही हल किया जा सकता है।

आजाद भारत, बोस की अवधारणा एक समाजवादी, लोकतांत्रिक गणराज्य की थी, जो पूर्ण समानता और सर्वांगीण स्वतंत्रता की अवधारणा पर आधारित थी। समानता के सिद्धांत पर आधारित मानव प्रगति उनकी सामाजिक–आर्थिक विचारधारा का प्रमुख सिद्धांत था। जो साम्यवाद की उनकी अवधारणा, समानता के सिद्धांत में अच्छी तरह से परिलक्षित होता है। बोस का मानना था कि भारतीय समाज में व्याप्त विभिन्न मतभेदों के बावजूद भारत में एक अंतर्निहित सामाजिक–सांस्कृतिक एकता है. जिसे भारत में राष्ट्रीय एकता लाने के लिए बढ़ावा दिया जाना चाहिए। सामाजिक समस्याएँ हर भारतीय के लिए समान हैं चाहे वह हिंदू, मुस्लिम, सिख या पारसी हो।

नेता जी ने अपनी राष्ट्रवाद की जो अवधारणा रखी उसमें भी सर्वप्रधान समाजवाद ही था। उनका समाजवाद राष्ट्रीय समाजवाद और कल्याणकारी समाजवाद का मिश्रण था। उनके अनुसार एक ऐसा समाजवाद राष्ट्र में विकसित हो जिसमें प्रत्येक बागडोर जनता के हाथों से होकर जाती हो। उनके समाजवाद में जनता की प्रत्येक छोटी–बड़ी इकाई का सीधा हस्तक्षेप हो और उसमें अमीर–गरीब, ऊँच–नीच सभी बराबर हो। नेताजी ने अखिल भारतीय ट्रेड यूनियन कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन को संबंधित करते हुये जुलाई, 1931 को स्पष्ट रूप से कहा था, ष्मेरे मन में तनिक भी संदेह नहीं है कि दुनियाँ की तरह भारत की मुक्ति समाजवाद पर निर्भर है। उनके समाजवाद का उद्देश्य बेरोजगारों को पूर्ण रोजगार प्रदान करना था। इसका उद्देश्य उच्च शिक्षा, उच्च जीवन स्तर, सामाजिक सुरक्षा, संपत्ति का राष्ट्रीयकरण और आप और संपत्ति का उचित और न्यायसंगत वितरण की सुविधाएं प्रदान करना था। उनका समाजवाद लोकतांत्रिक आधार वाला कट्टरपंथी और प्रगतिशील था। यह काफी हद तक राष्ट्रवाद और मानवतावाद का संश्लेषण था। वे मौजूदा सामाजिक बुराइयों जैसे जातिवाद, अशिक्षा आदि को मिटाकर भावी भारतीय समाज को एक नया आकार देना चाहते थे। वे सामाजिक–आर्थिक समानता पर आधारित भावी भारतीय समाज चाहते थे जहाँ कोई दुःख, कोई शोषण या कोई विशेषाधिकार प्राप्त वर्ग न हो। ये उनके भावी भारतीय समाज के मूल विचार थे।

सामाजिक समरसता

स्वतंत्र भारत में सुभाष चंद्र बोस एक समाजवादी समाज का निर्माण करनाचाहते थे जिसमें सभी सदस्यों को लगभग समान आर्थिक लाभ और सामाजिक स्थिति का आनंद मिलेऔर जन्म, लिंग, जाति, पंथ, धर्म के आधार पर मनुष्यों के बीच कोई अंतर ना हो। 3 मई, 1928 को पुणे में आयोजित प्रांतीय सम्मेलन में अपने अध्यक्ष भाषण में उन्होंने कहा, यदि आप भारत को वास्तव में महान बनाना चाहते हैं तो हमें एक लोकतांत्रिक समाज के आधार पर एक राजनीतिक लोकतंत्र का निर्माण करना होगा। जन्म के आधार पर विशेष अधिकार खत्म होना चाहिए।

बोस समाज में विद्यमान सामाजिक असमानता के विरोधी थे। वह छुआछूत के विरोधी थे जो उस समय भारतीय समाज में गहरी जड़ें जमा चुकी थी। अस्पृश्यता उन्मूलन के बिना सामाजिक समानता एक मिथक मात्र होगी। इस संबंध में बोस की बचपन की एक घटना उनकी आंखें खोलने वाली साबित हुई। उसके पड़ोसी ने उन्हे और उसके कुछ दोस्तों को एक दावत में भाग लेने के लिए आमंत्रित किया। लेकिन उसके परिवार वालों ने उसे ऐसा करने से मना किया, क्योंकि मेजबान अनुसूचित जाति का था। सुभाष ने अपने माता–पिता की बात मानी लेकिन इसे अनुचित माना। उन्होंने अपने परिवार के सदस्यों की इच्छा के विरुद्ध उस सामाजिक बुराई को मिटाने के लिए प्रयास शुरू किये। उन्होंने विवेकानन्द से प्रेरणा ली और माना कि दलित लोगों के उत्थान और बेहतरी के लिए क्रांति आवश्यक है। उन्होंने कहा श्प्रत्येक पुरुष और महिला स्वतंत्र और समान पैदा हुए हैं, उन्हें कुओं, तालाबों, सड़कों, स्कूलों और सार्वजनिक स्थानों और संस्थानों के संबंध में समान अधिकार होने चाहिए। वह पूर्ण सामाजिक समानता चाहते थे। कोई जाति नहीं होगी. कोई दलित वर्ग नहीं होगा। हर आदमी के पास समान अधिकार हो सुभाष चंद्र बोस के अनुसार भारत में जाति व्यवस्था वर्तमान समय में उतनी कठोर नहीं है जितनी प्राचीन काल में थी। प्राचीन काल में लोगों के पास केवल एक ही विकल्प था कि वे जिस जाति से आते थे, उसी जाति का पेशा अपना लें। लेकिन अब स्थिति बहुत बदल गयी है लोग अपनी पसंद का पेशा चुनने के लिए स्वतंत्र हैं। हालाँकि, अंग्रेजों ने ऐसी धारणा बनाने की कोशिश की कि भारतीय लोग जाति और धर्म के मुद्दे पर आपस में झगड़ते रहे और वे स्वशासन की स्थिति में न आए। अस्पृश्यता और अन्य सभी हानिकारक जाति प्रथाओं पर प्रतिबंध लगाना

आईएनए और आजाद हिंद सरकार के माध्यम से नेताजी सुभाष चंद्र बोस द्वारा शुरू किए गए प्रमुख सामाजिक सुधारों में से एक था। सुभाष चन्द्र बोस जाति–पंथ मजहब के आधार पर किसी प्रकार के भेदभाव के विरुद्ध थे। आजाद हिन्द फौज में भोजनालय जाति या पंथ के आधार पर नहीं था बल्कि रुचि के आधार पर विभाजित था। जिसकी जैसी रुचि उसके अनुसार भोजनालय चयन करने की सबको छूट थी। एक घटना अनुसार, सिंगापुर के चेट्टियार मंदिर के प्रधान पुजारी ने नेताजी से उनके दशहरा कार्यक्रम में मंदिर में आने का आग्रह किया। सुभाष बाबू ने कहा कि जिस मंदिर में सबको प्रवेश की अनुमति नहीं है वहाँ मैं नहीं जाऊँगा। दशहरे से पूर्व प्रधान पुजारी पुनः आये और बताया कि मंदिर समिति ने सबको प्रवेश देने पर सहमति दी है। इसके बाद सुभाष बाबू ने कार्यक्रम में जाना स्वीकार किया। सुभाष बाबू ने कभी जाति, पंथ या क्षेत्र के आधार पर किसी को पद नहीं दिया।

अंतरजातीय विवाह

अंतर्जातीय विवाहों की वकालत करने के पीछे सुभाष के पास एक और अधिक महत्वपूर्ण कारण यह था कि इससे जाति–भावना को दूर करने में मदद मिलती है। उनका मानना था कि वे हमारी खोई हुई जीवन शक्ति वापस ला सकते हैं। उन्होंने कहा कि हमारे लोगों का खून पतला हो रहा है इसलिए हमें ताजा खून डालने की जरूरत है और यह अंतरजातीय विवाह के मामलों को समर्थन देकर किया जा सकता है। सरकार द्वारा निचली जातियों के सदस्यों को सभी प्रकार के आरक्षण प्रदान करने से कहीं अधिक, अंतरजातीय विवाहों को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। सुभाष चंद्र ने भारत में विशेषकर बंगाल में अंतरजातीय विवाह का भी समर्थन किया। अपने पूरे जीवन में सुभाष चंद्र जाति व्यवस्था के खिलाफ रहे और अपने कई सार्वजनिक भाषणों में उन्होंने जोरदार शब्दों में इसके उन्मूलन की वकालत की।

नेता जी और महिला सशक्तिकरण

नेता जी ने महिला सशक्तिकरण और सदियों से चली आ रही भारतीय महिलाओं के सामाजिक बंधन को तोड़ने का समर्थन किया। नेताजी महिला अधिकारों के शुरुआती समर्थकों में से एक थे, जो नागरिक और सैन्य जीवन में पुरुषों और महिलाओं की समानता में दृढ़ता से विश्वास करते थे और भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं की भागीदारी को बेहद महत्वपूर्ण मानते थे। उन्होंने स्वतंत्रता आंदोलन में महिलाओं की सक्रिय भागीदारी को प्रोत्साहित किया और राष्ट्र निर्माण प्रक्रिया में उनके समान योगदान में विश्वास किया। उन्होंने महिलाओं को सशक्त बनाने और सार्वजनिक जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में उनकी भागीदारी सुनिश्चित करने की मांग की। महिलाओं के प्रति सुभाष चंद्र का रवैया काफी हद तक हमारे राष्ट्रीय संघर्ष में विशेषकर सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौरान महिलाओं द्वारा निभाई गई गौरवशाली भूमिका से बना।

1933 में लंदन में इंडिपेंडेंस लीग में अपने भाषण में बोस ने उन क्षेत्रों की ओर इशारा किया जिन पर तत्काल ध्यान देने की आवश्यकता थी जिसमें महिलाओं को पर्दे से मुक्त करना, महिलाओं के लिए अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा जिसमें आध्यात्मिक, नैतिक और शारीरिक प्रशिक्षण और समान अधिकार प्राप्त करने के लिए तत्काल कानून शामिल थे। उन्होंने महिलाओं की स्थिति को ऊपर उठाने और बेहतर बनाने के लिए बाल विवाह के खिलाफ न केवल आवाज उठाई बल्कि इस बुरी प्रथा को खत्म करने की भी बात कहीं जो वस्तुतः देश की महिलाओं से बड़ी मात्रा में स्वतंत्रता छीन लेती थी। चूंकि सुभाष जीवन के सभी क्षेत्रों राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक में असमानता के खिलाफ थे, इसलिए उन्होंने पुरुषों और महिलाओं के बीच कोई भेदभाव नहीं किया। सुभाष का मानना था कि हमारी स्त्रियों का पतन साहस की कमी के कारण हुआ और सुभाष ने पुरुषों और महिलाओं के बीच काम का कोई विभाजन नहीं किया। उन्होंने कहा कि एक महिला हर क्षेत्र में काम कर सकती है. लेकिन कुछ विशिष्ट क्षेत्र हैं जिनमें वे अधिक कौशल के साथ काम कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, वे हमारे सैन्य अभियानों के समय अस्पतालों में घायल सैनिकों की बेहतर सेवा तथा समाज के शिक्षक की भूमिका निभा सकती है।

नेता जी ने 22 अक्टूबर 1943 को भारतीय राष्ट्रीय सेना के भीतर दुनिया की पहली महिला रेजिमेंट की स्थापना की गई और इसे षानी झाँसी रेजिमेंटष नाम दिया गया। यह एक पूर्ण लड़ाकू रेजिमेंट थी इसकी भारतीय महिला सैनिकों को अपने पुरुष समकक्षों के समान सभी आवश्यक सैन्य प्रशिक्षण प्राप्त था। बोस का मानना था कि महिलाएं पुरुषों के बराबर हैं इसलिए उन्हें लड़ने के लिए भी तैयार रहना चाहिए। सुभाष चंद्र बोस वास्तव में अपने जीवन में महिलाओं ने प्रभावित थे। जिन महिलाओं ने उनके विचारों को आकार दिया उनमें मजबूत इरादों वाली उनकी माता प्रभावती देवी, बोस के राजनीतिक गुरु चित्तरंजन दास की पत्नी बसंती देवी जो अपने आप में एक स्वतंत्रता सेनानी और उनकी पत्नी, एमिली शेंकल, इन सभी महिलाओं ने महिलाओं के बारे में बोस के विचारों के विकास को पारंपरिक पितृसत्तात्मक दृष्टिकोण से बदलने में भूमिका निभाई।

रानी झाँसी रेजिमेंट की स्थापना

महिलाओं को पूर्ण मुक्ति केवल शराब की दुकानों पर धरना देने और खादी बुनने से नहीं मिल सकती। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि महिलाओं को स्वतंत्रता की लड़ाई में सैनिकों के रूप में सेवा करने सहित पूर्ण लैंगिक समानता दी जानी चाहिए। इस प्रकार भारतीय महिलाओं को वास्तविक सैन्य कार्रवाई में शामिल करने का एक प्रयोग सुभाष चंद्र बोस द्वारा शुरू किया गया, जब 1943 में उन्होंने दक्षिण पूर्व एशिया में एक प्रवासी सेना खड़ी की जिसे भारतीय राष्ट्रीय सेना (आईएनए) के नाम से जाना गया। उन्होंने एक महिला रेजिमेंट बनाने का फैसला किया जिसे उन्होंने झाँसी की रानी रेजिमेंट कहा, जिसका नाम 1857 के विद्रोह की महान नायिका रानी लक्ष्मी बाई के नाम पर रखा गया। अक्टूबर 1943 में इस नई रेजिमेंट के लिए प्रशिक्षण शिविर खोला गया, जिसमें दक्षिण पूर्व एशिया में रहने वाले सभी धर्मों और जातियों के भारतीय परिवारों की लगभग पंद्रह सौ महिलाएँ शामिल हुई। उन्हें पूर्ण सैन्य प्रशिक्षण दिया गया और युद्ध कर्तव्यों के लिए तैयार किया गया। प्रशिक्षण शिविर के उद्घाटन के दौरान अपने भाषण में नेताजी ने कहा, झाँसी रेजिमेंट प्रशिक्षण शिविर पूर्वी एशिया में हमारे आंदोलन की प्रगति में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है।

आजाद हिन्द सरकार में महिला विभाग

नेताजी ने दक्षिण पूर्व एशिया में स्वतंत्र भारत की अंतरिम सरकार के हिस्से के रूप में रानी झाँसी रेजिमेंट की प्रमुख कैप्टन लक्ष्मी स्वामीनाथन सहगल के तहत एक अलग महिला विभाग के निर्माण में योगदान दिया। सामाजिक कार्यकर्ताओं के रूप में महिलाओं के प्रशिक्षण से निपटने के लिए महिला विभाग एक अलग शाखा थी। वह चाहते थे कि राज्य सभी मामलों में महिलाओं और पुरुषों को समान अधिकार दे। नेताजी सुभाष चंद्र बोस वास्तव में एक उल्लेखनीय क्रांतिकारी राष्ट्रवादी थे, जिन्होंने महिला सशक्तिकरण की वकालत और महिलाओं को पितृसत्तात्मक नियंत्रण के बंधनों से मुक्त कराने की मांग की। महिलाओं की मुक्ति के लिए उनके नारीवादी विचार आईएनए और रानी झाँसी रेजिमेंट के गठन में परिलक्षित होते हैं।

निष्कर्ष

नेताजी सुभाष चंद्र बोस की सामाजिक विचारधारा एक स्वतंत्र और प्रगतिशील भारत के लिए एक व्यापक दृष्टिकोण रखती है। समानता, सामाजिक न्याय, शिक्षा, आर्थिक आत्मनिर्भरता और महिला सशक्तिकरण पर उनका जोर राष्ट्र–निर्माण के लिए समग्र दृष्टिकोण को दर्शाता है। उनकी सामाजिक विचारधारा की गहराई को समझना और उसकी सराहना करना भारत के स्वतंत्रता संग्राम और उसके बाद एक अधिक न्यायसंगत और समावेशी समाज की दिशा में यात्रा के लिए महत्वपूर्ण है। एक सच्चे समाजवादी के रूप में, वह दलितों, किसानों और श्रमिकों की मुक्ति चाहते थे। उन्हें अपनी मातृभूमि से जबरदस्त और बिना शर्त प्यार था। सुभाष चंद्र बोस को भारत में देशभक्ति के प्रतीक के रूप में दर्शाया गया है जिन्होंने अपनी मातृभूमि को साम्राज्यवादी ब्रिटिश शासन के बंधन से मुक्त कराने के लिए अपने जीवन का बलिदान दिया।

संदर्भ सूची

1. Bose Sisir K, Bose Sugata. The Essential writings of Netaji Subash Chandra Bose, Netaji Research Bureau, Calcutta, 1994, 287-298.
2. Bose, Subhas Chandra. an Indian Pilgrim: An Unfinished Autobiography, Pauls Press, New Delhi,1997:(2-3):6.
3. Ayer SA. Selected Speeches of Subhas Chandra Bose", Publication Division, Govt of India, New Delhi, 1961, 33-63.
4. Hildebrand Vera. Women at War: Subhas Chandra Bose and the Rani of Jhansi, 2018. Regiment, United States: Naval Institute Press.
5. Chandra, Bipan. History of Modern India, Orient Blackswan Pvt. Ltd., 2009.
6. Bose, Sisir kr, Bose Sugata (ed) (2007), Chalo Delhi, Writings and Speeches 1943-1945, Netaji Collected Works Volume-12 Calcutta, Netaji Reseacch Bureau, 199.
7. Bose, Subhas Chandra (1962), Crossroads: Being the Works of Subhas Chandra Bose 1938-40, Asian Publishing House, Bombay, p. 23-25.
8. Gopalan, Anuplal (2016), Netaji Subhas Chandra Bose: Contributions of a Revolutionary to Indian Social Reforms and Indian Industrial Relations, Artha-Journal of Social Sciences, Vol 15, No 2 pp 69-85.
9. Singh, Abnish (2012), Formative Influence of Swami Vivekananda on Subhash Chandra Bose: A Biographical Study, International Journal of Higher Education and Research, 1(1), pp 1-7.
10. राठौर, हनुमान सिंह, (2020), जय हिंद नेताजी सुभाष चंद्र बोस बहुआयामी व्यक्तित्व, शैक्षिक फाउंडेशन मौजपुर, दिल्ली, पृष्ठ–137–144.